IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"छात्रों की शैक्षिक प्रगति पर उनके अभिभावकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन।"

A STUDY OF EFFECT OF PARENTS SOCIAL AND ECONOMIC STATUS ON STUDENTS EDUCATIONAL PROGRESS

नीरजा गुप्ता
अस्सिटेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

ऋचा गुप्ता

अस्सिटेंट प्रोफेसर
स्वामी विवेकानन्द कॉलेज फॉर प्रोफेषनल स्टडीज

सीथल, बीकानेर

1. षोध सार :–

वर्तमान समय में आमतौर पर देखा जाता है कि जिन परिवारों के छात्रों या छात्राओं के माता–पिता या अभिभावकों की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, वह अपने बालक–बालिकाओं को अधिक शैक्षिक सुविधायें प्रदान करने के लिये प्रयासरत रहते है।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों में से कुछ छात्र बहुत गरीब परिवार के होते हैं जिससे उनकी शिक्षा सम्बन्धी समस्त सुविधायें पूर्ण नहीं हो पाती, उनकी शिक्षा बाधित होती है, गरीब परिवार से जुड़े हुए छात्रों को अपनी शिक्षा के लिये रूपये कमाने होते हैं, अतः छात्र अपनी शिक्षा पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दे पाता जिसका परिणाम यह होता है कि छात्रों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित होती है, जो अभिभावकों के आर्थिक व सामाजिक स्तर को प्रभावित करते है।

2. षोध का षीर्षक :–

"छात्रों की शैक्षिक प्रगति पर उनके अभिभावकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन।"

3. अध्ययन के उद्देष्य :– ६

1. छात्र व छात्राओं के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. छात्र–छात्राओं की शैक्षिक प्रगति का अध्ययन करना।
3. छात्र–छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक षैक्षिक प्रगति का अध्ययन करना।

4. षोध की परिकल्पनाएँ–

1. विद्यार्थियों के आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. छात्र–छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर का शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

5. षोध प्रविधियाँ :–

1. **विधि :–** प्रस्तुत षोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
2. **न्यादर्ष :–**प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर में माध्यमिक स्तर के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

6. उपकरण :–चयनित समस्या के सन्दर्भ में अध्ययन हेतु अर्थात् प्रदत्त एकत्रित करने के लिये निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा –

(1) छात्र व छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर को ज्ञात करने हेतु स्वयं निर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

(2) छात्र व छात्राओं की शैक्षिक प्रगति ज्ञात करने हेतु कक्षा–प के विद्यार्थियों के गत वर्ष के मूल्यांकन परिणामों का पता लगाया जायेगा तथा परीक्षाफलों से प्राप्त परिणामों को आधार माना जाएगा।

7. प्रदत्त संचयन :–

- ❖ शोधकर्त्री द्वारा आर्थिक–सामाजिक स्तर का अध्ययन करने हेतु 20 कथनों की प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इस प्रपत्र को वितरित करने व प्रशासित करने से पूर्व सभी विद्यार्थियों को सामान्य निर्देश दिए।
- ❖ सभी विद्यार्थियों को प्रत्येक कथन पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए निर्देश दिये गये।
- ❖ तत्पश्चात् प्रश्नावली का प्रशासन पूर्व नियोजित सूचना व कार्यक्रम के अनुसार किया गया।
- ❖ प्राप्त आँकड़ों का उद्देश्य आधारित विवेचन किया गया। इस हेतु सर्वप्रथम प्रत्येक कथन पर चार श्रेणियों से प्राप्त उत्तरों को आवृत्ति में मापा गया।
- ❖ टी–परीक्षण के आधार पर प्रत्येक पद का विवेचन किया गया।
- ❖ विवेचन के आधार पर निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त हुए।

8. परिणाम :–

परिकल्पना :– 1
विद्यार्थियों के आर्थिक स्तर का उनकी षैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

आर्थिक स्तर का प्रतिषत	उच्च स्तर	निम्न स्तर	षैक्षिक स्तर का प्रतिषत	ɩ	ɩɩ	ɩɩɩ
	40:	60:		49ण01:	45ण09:	5ण88:
	22̣18	39̣21		85ण07:	14ण28:	0ण00

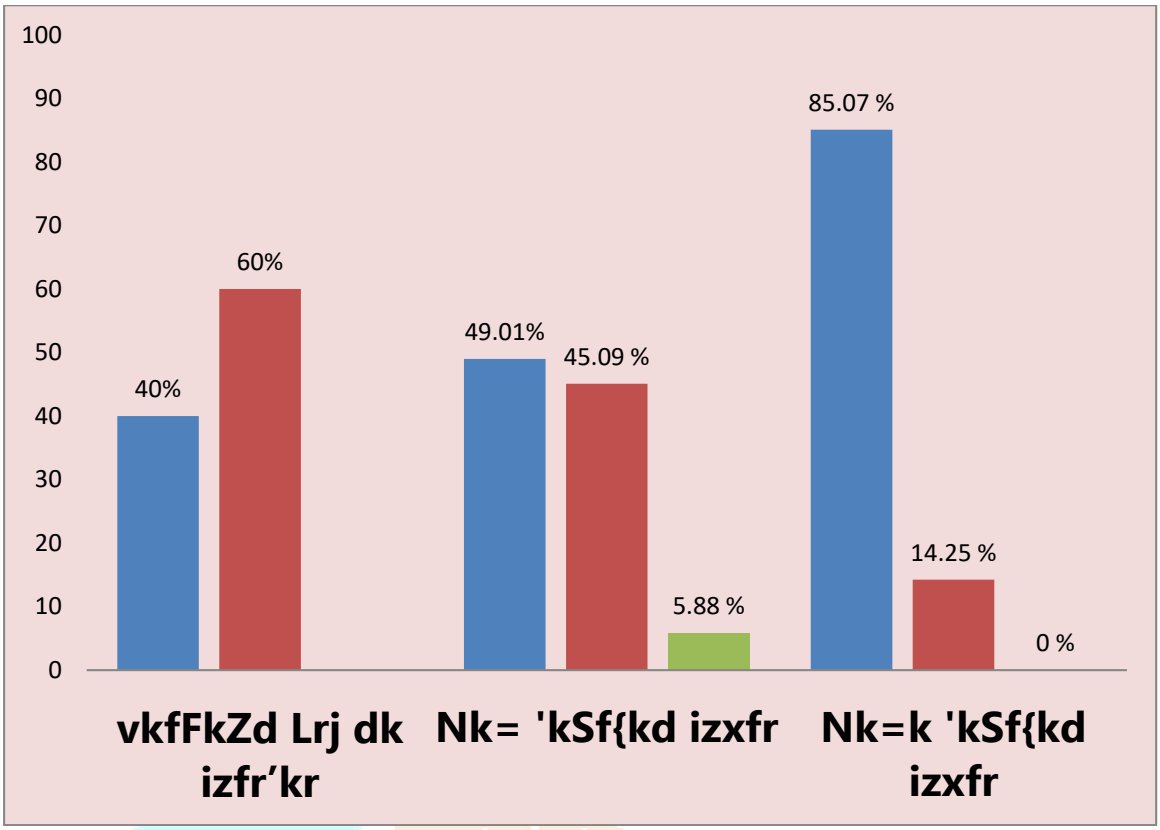

तलिका संख्या :– 1 के अध्ययन से पाया गया कि आर्थिक स्तर के प्रतिषत को दो स्तर में बाँटा गया उच्च स्तर में 40 प्रतिषत व निम्न स्तर का 60 प्रतिषत पाया गया जिसमें अधिकतर विद्यार्थी निम्न स्तर के पाये गये।षैक्षिक प्रगति में *Ist* श्रेणी में 49.01 प्रतिषत व *IInd* श्रेणी में 45.09 प्रतिषत व *IIIrd* श्रेणी में 5.88 प्रतिषत रहा जिसमें अधिकतर छात्र निम्न स्तर के पाये गये। *IInd* व *IIIrd* श्रेणी में अधिकतर छात्र निम्न स्तर के व *Ist* श्रेणी में उच्च स्तर के छात्र पाये गये।छात्र की अपेक्षा छात्राओं का षैक्षिक स्तर अत्यधिक अच्छा रहा। अधिकतर छात्रायें उच्च स्तर में पाई गई।

परिकल्पना :– 2
विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का उनकी षैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

आर्थिक	उच्च स्तर	निम्न स्तर	षैक्षिक	ι	ιι	ιιι
स्तर का	42ण32:	46ण55:	स्तर का	49ण01:	45ण09:	5ण88:
प्रतिषत	22̣18	39̣21	प्रतिषत	85ण07:	14ण28:	0ण00

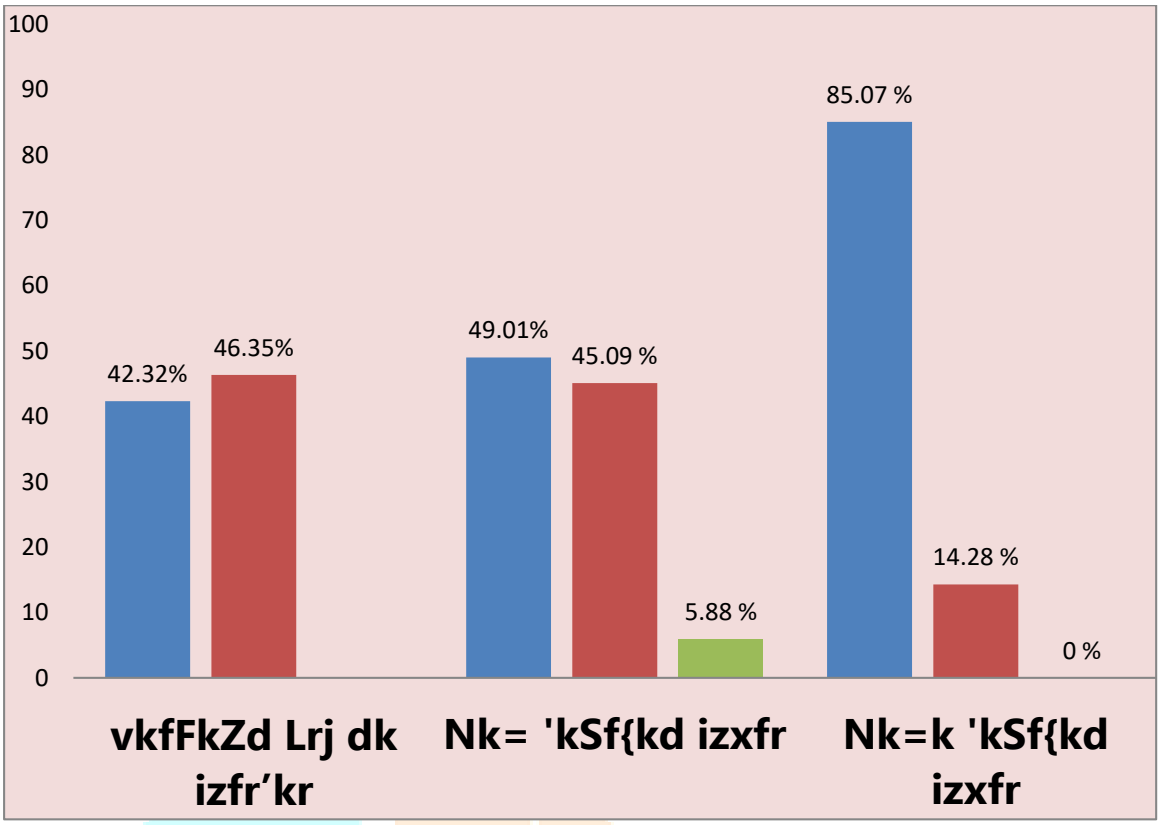

तालिका संख्या – 2 के अध्ययन में हमने पाया कि विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का मान 50 प्रतिषत से कम रहा है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का प्रभाव षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है।सामाजिक स्तर में छात्र का 42.32 प्रतिषत व छात्राओं का 46.65 प्रतिषत रहा। जिसमें अधिकतर विद्यार्थी निम्न स्तर के पाये गये। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का सामाजिक स्तर अच्छा पाया गया।

विष्लेषण :– विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का प्रभाव उनकी षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है क्योंकि अगर, विद्यार्थियों का सामाजिक परिवेष अच्छा होगा तभी षैक्षिक स्तर अच्छा होगा। सामाजिक स्तर विद्यार्थियों की षैक्षिक प्रगति हो अत्यधिक प्रभावित करता है।

परिकल्पना :– 3

छात्र–छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर का षैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

आर्थिक स्तर	उच्च स्तर	निम्न स्तर	समाजिक स्तर का	छात्र	छात्रा	षैक्षिक स्तर	I	II	III
का प्रतिषत	42.32 %	46.55 %	प्रतिषत	42.32 %	46.65 %	का प्रतिषत	49.01 %	45.09%	5.88%
	22+18	39+21					85.07 %	14.28%	0.00

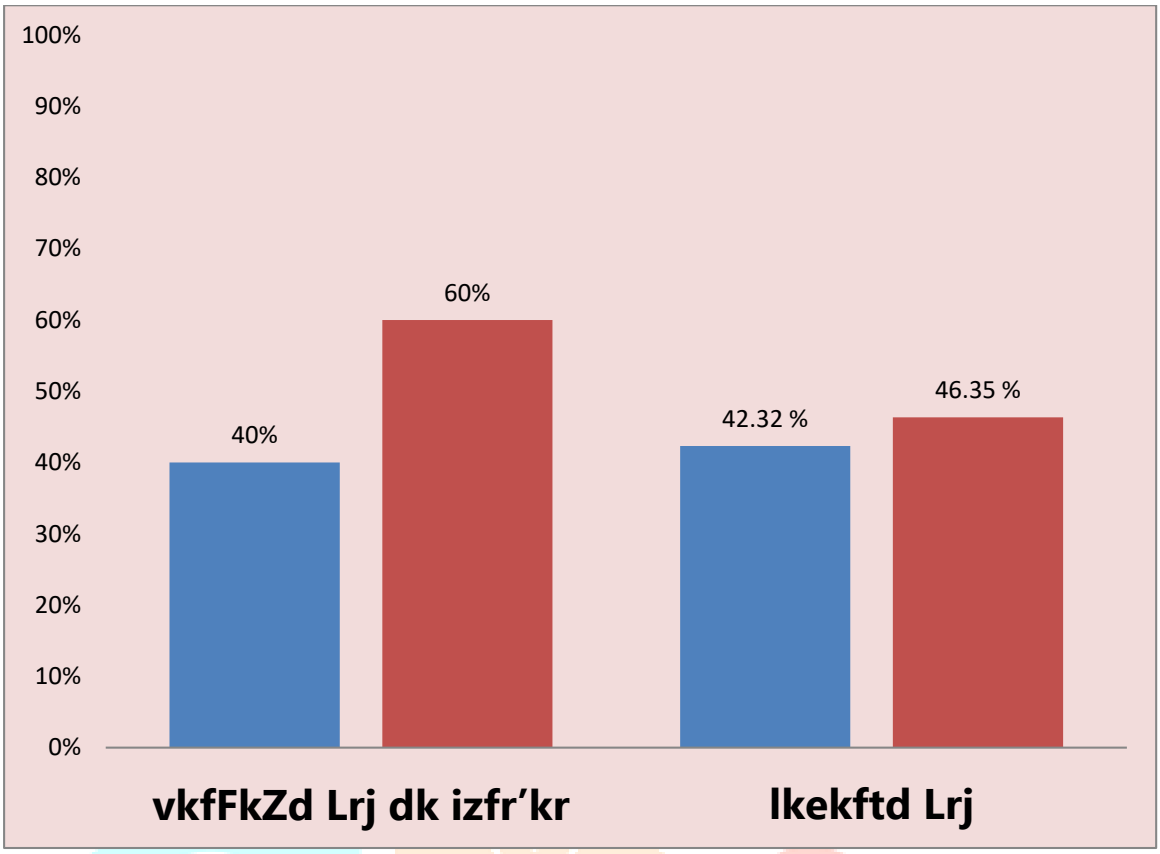

विष्लेषण :– विद्यार्थियों के आर्थिक व सामाजिक स्तर का प्रभाव षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है। अत्यधिक मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उच्च स्तर के पाये गये तथा सामाजिक स्तर अत्यधिक उच्च वर्ग का ही अधिक पाया गया। सामान्यतय निम्न वर्ग के विद्यार्थियों का आर्थिक व सामाजिक स्तर अच्छा न होने के कारण षैक्षिक प्रगति को प्रभावित करता है। अतः अभिभावकों का आर्थिक व सामाजिक स्तर अच्छा न होने के कारण विद्यार्थियों का षैक्षिक स्तर अच्छा नहीं हो पाता।

9. परिणामों की विवेचना :–

❖ **परिकल्पना–1 रू.** विद्यार्थियों के आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

➢ **निष्कर्ष :** परिकल्पना – 1 के अध्ययन से पाया गया कि आर्थिक स्तर के प्रतिषत को दो स्तर में बाँटा गया उच्च स्तर में 40 प्रतिषत व निम्न स्तर का 60 प्रतिषत पाया गया जिसमें अधिकतर विद्यार्थी निम्न स्तर के पाये गये। षैक्षिक प्रगति में Ist श्रेणी में 49.01 प्रतिषत व $IInd$ श्रेणी में 45.09 प्रतिषत व $IIIrd$ श्रेणी में 5.88 प्रतिषत रहा जिसमें अधिकतर छात्र निम्न स्तर के पाये गये। $IInd$ व $IIIrd$ श्रेणी में अधिकतर छात्र निम्न स्तर के व Ist श्रेणी में उच्च स्तर के छात्र पाये गये। छात्र की अपेक्षा छात्राओं का षैक्षिक स्तर अत्यधिक अच्छा रहा। अधिकतर छात्रायें उच्च

स्तर में पाई गई क्योंकिविद्यार्थियों के आर्थिक स्तर का प्रभाव शैक्षिक प्रगति पर पड़ता है एवं अभिभावकों का आर्थिक स्तर अच्छा न होने के कारण विद्यार्थियों को अच्छी षिक्षा नहीं दिला पाते।

❖ **परिकल्पना–2** विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

➢ **निष्कर्ष :** परिकल्पना – 2 के अध्ययन से पाया गया कि विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का मान 50 प्रतिषत से कम रहा है। अतः विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का प्रभाव षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है। सामाजिक स्तर में छात्र का 42.32 प्रतिषत व छात्राओं का 46.65 प्रतिषत रहा। जिसमें अधिकतर विद्यार्थी निम्न स्तर के पाये गये। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का सामाजिक स्तर अच्छा पाया गया क्योंकि विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर का प्रभाव उनकी शैक्षिक प्रगति पर पड़ता है एवं अगर विद्यार्थियों का सामाजिक परिवेष अच्छा होगा तभी शैक्षिक स्तर अच्छा होगा।

❖ **परिकल्पना–3 रू.** छात्र–छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर का शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष : परिकल्पना – 2 के अध्ययन से पाया गया कि अध्ययन से आर्थिक स्तर निम्न वर्ग का 60 प्रतिषत व उच्च स्तर का 40 प्रतिषत व सामाजिक स्तर छात्रों का 42.32 प्रतिषत व छात्राओं का 46. 65 प्रतिषत रहा। छात्र–छात्राओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर प्रभाव षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है क्योंकि विद्यार्थियों के आर्थिक व सामाजिक स्तर का प्रभाव षैक्षिक प्रगति पर पड़ता है। अत्यधिक मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उच्च स्तर के पाये गये तथा सामाजिक स्तर अत्यधिक उच्च वर्ग का ही अधिक पाया गया। सामान्यतय निम्न वर्ग के विद्यार्थियों का आर्थिक व सामाजिक स्तर अच्छा न होने के कारण षैक्षिक प्रगति को प्रभावित करता है। अतः अभिभावकों का आर्थिक व सामाजिक स्तर अच्छा न होने के कारण विद्यार्थियों का षैक्षिक स्तर अच्छा नहीं हो पाता।

10. षैक्षिक निहितार्थ :–

1. षिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अन्वेषण के परिणाम समाज में एक नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देष्य को पूर्णतः प्रदान की जाती है। षिक्षा जगत निरन्तर अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को निष्चित रूप से परिभाषित करके उनके निराकरण का मार्ग दिखाया जा सकता है।
2. विद्यार्थी तथा अभिभावकों के बीच का सम्पर्क अभिभावकों का शैक्षिक स्तर आदि शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करते है और वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन पर भी पड़ता है।
3. विद्यार्थियों में आत्म विष्वास बढ़ाया जाये ताकि उन्हें सही मार्गदर्षन प्रदान करे जिससे शैक्षिक उपलब्धि के निम्न स्तर से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकें।
4. विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के बीच में आने वाली आर्थिक कमजोरियों को दूर किया जाये ताकि विद्यार्थी शैक्षिक प्रगति के स्तर को आगे बढ़ा सके।
5. विद्यार्थियों के सामाजिक स्तर में आने वाली समस्या को दूर करके समय–समय पर सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करके विद्यार्थियों व अभिभावकों को प्ररित किया जा सकें।

11. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. **बोगार्ड्स एस. (1954)** : ''सोशियोलॉजी'', मेग्राहिल कम्पनी, न्यूयॉर्क, पृष्ठ संख्या 35.
2. **चेस्टर, डब्ल्यू हेरिस (1960)** : ''एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च'', न्यूयॉर्क मैकमिलन, पृ.सं. 49
3. **डब्ल्यू. एम. टैवर्स (2009)** :''शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ'', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ.सं. 20–21
4. **गुड विलियम जे. एवं हैट पाल. के (1952)** : ''मेथड्स इन सोशल रिसर्च'', मैकगाहिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क, पृ.सं. 45

WEBLIOGRAPHY

- <http://www.lib.umi.dessertation.com.com>
- <hhtp://www.umi.dissertation.com>
- <hhtp://www.dissertation.com>
- <hhtp://www.ncert.com>